सामाजिक समूह

मनुष्य की जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक आवश्यकता होती है. आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समूह में रहना आवश्यक है क्योंकि इनकी पूर्ति मनुष्य स्वयं नहीं कर सकता। इसी कारण मनुष्य अनेक समूहों का सदस्य है। परिवार, पड़ोस इत्यादि समूह के ही उदाहरण हैं। इनका मानव व्यवहार को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण स्थान होता है। सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषता यह है कि मनुष्य परस्पर अंतक्रिया करते हैं, संवाद करते हैं तथा सामाजिक सामूहिकता को निर्मित करते हैं। प्रत्येक समाज चाहे उसका स्वरूप कैसा भी क्यों ना हो मानवीय समूह और सामूहिकता विद्यमान रहती है। इन समूहों एवं सामूहिकता के प्रकार अलग-अलग होते हैं।

सामान्य अर्थों में समूह का अर्थ व्यक्तियों के संग्रह या समुच्चय से लगा लिया जाता है। संग्रह या समुच्य केवल लोगों का जमावाड़ा होता है जो एक समय में एक ही स्थान पर होते हैं लेकिन एक - दूसरे से कोई निश्चित संबंध नहीं रखते। उदाहरण के लिए हम खेल के मैदान, जेल से, बाजार, सिनेमाघर, रेलवे स्टेशन, हवाई अडडे, अथवा बस स्टॉप पर व्यक्तियों की भीड़ को देखते हैं लेकिन उन्हें समूह की संज्ञा नहीं दी जा सकती। इसका कारण यह है कि उन व्यक्तियों में सामाजिक संबंधों व पारस्परिक चेतना का अभाव होता है। चेतना के अभाव में परस्पर संबंध स्थापित नहीं होते। इन्हें अर्द्धसमूह तो कहा जा सकता है, परंतु सामाजिक समूह नहीं। अर्द्धसमूहों में संरचना अथवा संगठन की कमी होती है तथा सदस्य समूह के अस्तित्व के प्रति अनभिज्ञ होते है।

समूहों के निर्माण हेतु अंतर्क्रिया तथा संचार का होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए बाजार में सामान्य दृष्टिकोण से व्यक्तियों के संग्रह को समूह नहीं कहा जा सकता है। किंतु यदि किसी कारण से चाहे पॉकेटमार के पकड़ने से या अन्य किसी कारण से वे संग्रहित लोग आपस में अंतर्क्रिया करते है तो उनमें सामाजिक संबंधों का जन्म होता है। तब उस समय संग्रह समूह में परिवर्तित हो जाएगा। इसी भांति, महिला आंदोलन ने महिलाओं को एक सामूहिक निकाय के रूप में संगठित कर इन्हें सामाजिक समूह के रूप में परिवर्तित किया है। इन आंदोलनों ने महिलाओं को अपनी पहचान एक सामूहिकता और समूह के रूप में विकसित करने में सहायता दी है। एक सामाजिक वर्ग जाति अथवा समुदाय से संबंधित व्यक्ति एक सामूहिक निकाय के रूप में संगठित होकर जब दीर्घकालीन अंतक्रियाएं करने लगते है तथा उनमें अपनत्व की भावना विकसित होने लगती है, तो वह समूह का रूप धारण कर लेते हैं।

एक सामाजिक समूह में कम से कम निम्न लक्षण होने अनिवार्य है.

1. निरंतरता के लिए दीर्घ एवं स्थायी अंतक्रिया,

2. इन अंतर्क्रियाओं का स्थिर प्रतिमान,

3. समूह एवं उसके नियमों एवं प्रतीकों के प्रति जागरूकता,

4 सामान्य रुचि,

5 सामान्य आदर्शों एवं मूल्यों को अपनाना तथा

6. एक निश्चित संगठन या संरचना का होना।

बोटोमोर के अनुसार, सामाजिक समूह व्यक्तियों के उस योग को कहते हैं जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के बीच निश्चित संबंध होते है और प्रत्येक व्यक्ति समूह के प्रति और इसके प्रतिकों के प्रति सचेत होता है।

मैकाइकर एवं पेज के अनुसार, समूह से हमारा तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों के संग्रह से है जो एक-दूसरे के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करते हैं.

ऑगवर्न एवं निमकोफ के अनुसार जब कभी दो या दो से अधिक एकत्र होकर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, तो वे सामाजिक समूह का निर्माण करते है।

एंथोनी गिडेंस के अनुसार सामाजिक समूह केवल व्यक्तियों का एक योग है जो नियमित रूप से एक दूसरे के साथ अंतर्क्रिया करते हैं। इस तरह की नियमित अंतर्क्रियाएं समूह के सदस्यों को एक निश्चित इकाई का रूप देती है। इन सदस्यों की पूर्ण रूप से सामाजिक पहुंचान अपने समूह से ही होती है।

रोबर्ट मर्टन ने माना है कि सामाजिक समूह की किसी भी परिभाषा में अनिवार्य तत्व अंतक्रिया है। समूह के सदस्य कितने ही क्यों न हो जब तक उनमें अंतक्रिया नहीं होती, वे समूह नहीं बनते। मर्टन ने सामाजिक समूह की परिभाषा अपने संदर्भ समूह सिद्धांत की पृष्ठभूमि में दी है। उनका कहना है कि समूह एकत्रीकरण नहीं है। प्रजाति और राष्ट्र तो व्यक्तियों का एकत्रीकरण है। इन व्यक्तियों में पारस्परिक अंतर्क्रियाएं नहीं होती। अतः सामाजिक समूह मर्टन के अनुसार एकत्रीकरण तो है लेकिन इसके अतिरिक्त सदस्यों में अंतक्रिया होती है "हम एक ही समूह के सदस्य है", "हम सुदृढ़ता की भावना भी रखते है", आदि भी इसकी आवश्यकताएं हैं। इन सदस्यों में मानदंड और मूल्य भी एक समान होते हैं.

सामाजिक समूह की सामान्य विशेषताएँ

1. **समूह व्यक्तियों का संग्रह है**- समूह के लिए व्यक्तियों का होना आवश्यक है। यह जरूरी नहीं है कि समूह के सदस्यों में शारीरिक निकटता ही हो, परंतु उनके मध्य अंतर्क्रिया का होना आवश्यक है। इस अंतर्क्रिया में सामाजिक संबंधों का जन्म होता है।

2. **समूहों को अपनी सामाजिक संरचना होती है**- प्रत्येक समूह की एक सामाजिक संरचना होती है। फीचर के अनुमार प्रत्येक समूह की अपनी सामाजिक संरचना होती है। उस संरचना में व्यक्तियों की परिस्थिति निर्धारित होती है प्रत्येक समूह में आयु, लिंग, जाति, व्यवसाय आदि के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण पाया जाता है। प्रत्येक सदस्य को समूह में अपनी परिस्थिति संबंधित भूमिका निभानी पड़ती है।

3. **समूह में कार्यात्मक विभाजन होता है-** समूह में संगठन बनाए रखने के लिए प्रत्येक सदस्य विविध कार्य करता है. उदाहरण के लिए शिक्षण संस्था में प्रत्येक शिक्षक अलग-अलग विषय को पढ़ाते है। प्रधानाचार्य की अपनी अलग भूमिका होती है। और क्लर्क उनके लिए निर्धारित कार्यों को निष्पादित करते हैं।

4. **समूह में सामान्य स्वार्थों की भावना होती है**- मनुष्य समूह का सदस्य इसलिए बनता है कि उसके माध्यम से उसके स्वार्थों की पूर्ति होती है। अतएव उनकी भावनाएं भी एक सी होती है। यदि सदस्यों के स्वार्थ या हित असमान होगे तो ऐसी दशा में संबंधों में दृढ़ता रहेगी और मसूर में संगठन ही होगा।

5. **समूह की सदस्यता ऐच्छिक होती है-** परिवार जैसे समूह को छोड़कर अन्य सभी समूह की सदस्यता ऐच्छिक होती है. यह व्यक्ति की व्यक्तिगत रुचि तथा लक्ष्यों की प्रकृति पर निर्भर करता है कि वह किस समूह का सदस्य बनेगा.

6 **समूह की अपनी सत्ता होती है-** समूह का आधार सामूहिक व्यवहार के अभाव में समूह का अस्तित्व संभव नहीं है. व्यक्ति समूह के समक्ष अपने अस्तित्व को चहुत गौण मानता है। समूह पर उसे पूरा विश्वास तथा श्रद्धा होती है। अतः वह समूह के नियम तोड़ने से डरता है। यह भावना समूह के अस्तित्व की रक्षा करती है। इसके साथ ही साथ इससे समूह को स्थायित्व तथा संगठन प्राप्त होता है।

7. **सामाजिक मानदंड समूह में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है-** समूह अपने अस्तित्व के लिए कुछ मानदंडों के आदर्श नियमों का स्थापना करता है। इनके द्वारा वह अपने सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करता है. इन्हीं मानदंडों के कारण सदस्यों के व्यवहार में एकरूपता रहती है। यह जरूरी नहीं है कि सभी समूहों के सामान्य मानदंड हों तथा वे सभी सदस्यों पर सामान रूप से लागू हों.

8. **समूह एक मूर्त संगठन है**- सामाजिक समूह समान उद्देश्यों व लक्ष्यों वाले व्यक्तियों का संकलन है। क्योंकि यह व्यक्तियों का संकलन है अतएव यह मूर्त होता है।

सामाजिक समूह का वर्गीकरण

जिन समूहों के हम सदस्य हैं, वे सभी समान महत्व के नहीं हैं। कुछ समूह हमारे साथ जन्म से ही जुड़े हैं। परिवार, जाति, प्रजाति आदि ऐसे समूह हैं जिनके सदस्य हम जन्म के पश्चात् ही बन जाते हैं। दूसरे प्रकार के समूह वे हैं जिनके सदस्य हम, अपनी पसंदगी से हैं, लेकिन जिनके बिना भी हमारा काम चल नहीं सकता। चिकित्सालय, विश्वविद्यालय या महाविद्यालय, व्यावसायिक संगठन, सार्वजनिक प्रतिष्ठान और ऐसे ही अनेकों संगठन हैं जिनका योगदान हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है।

समाजशास्त्रियों ने समूह का वर्गीकरण तो किया है लेकिन इस संबंध में, उनमें कोई एक राय हो ऐसा नहीं है। किसी ने समूह के आकार को आधार बनाया है तो किसी ने समय को वर्गीकरण का आधार माना है। सच्चाई यह है कि समूह का वर्गीकरण सभी ने अपने-अपने तर्क और संदर्भ के आधार पर किया है। परिणामस्वरूप समूह के वर्गीकरण अनेक हैं, उनमें मतैक्य का अभाव है। इस विभिन्नता के होते हुए भी निश्चित रूप से सभी समाजशास्त्री अमेरिकी समाजशास्त्री चार्ल्स होर्टन कूले से सहमत हैं। उन्होंने प्राथमिक समूह को अनिवार्य प्रकार बताया है।

प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह

प्राथमिक समूहः प्राथमिक समूह के कई चित्रण हैं, परिवार, मित्र मंडली, जनजातीय समाज, पड़ोस और खेल समूह। इनके सदस्यों के बीच में घनिष्ठ, अनौपचारिक, प्रत्यक्ष संबंध होते हैं। इस समूह के सदस्यों में अपनत्व की भावना होती है। भारतीय गांव एक प्राथमिक समूह है। गांव के लोग न केवल एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, वे प्रत्येक परिवार के इतिहास से परिचित होते हैं। इरावती कर्वे अपनी पुस्तक दि हिंदु सोशल ऑर्गेनाइजेशन में कहती है कि गांव में जब कोई अजनबी आता है तो उसकी पहचान अजनबी के रूप में सारा गांव करता है। गांव के एक परिवार का दामाद वस्तुतः संपूर्ण गांव का दामाद समझा जाता है। एक परिवार का भांजा संपूर्ण गांव का भांजा समझा जाता है। ये सब संबंध प्राथमिक हैं।

कूले ने अपनी पुस्तक सोशल ऑरगेनाइजेशन में प्राथमिक समूह की परिभाषा इस तरह की है: प्राथमिक समूहों से मेरा तात्पर्य ऐसे समूहों से है, जिनकी विशेषता आमने-सामने के घनिष्ठ साहचर्य और सहयोग के रूप में व्यक्त होती है। ये समूह अनेक अर्थों में प्राथमिक हैं, परंतु मुख्यतः इस बात में कि वे व्यक्ति की सामाजिक प्रकृति और आदशों के निर्माण में मौलिक है। घनिष्ठ साहचर्य का परिणाम यह होता है कि एक सामान्य संपूर्णता में वैयक्तिकताओं का इस प्रकार एकीकरण हो जाता है कि प्रायः कई प्रयोजनों के

लिए व्यक्ति का अहम् समूह का सामान्य जीवन और उद्देश्य बन जाता है। इस संपूर्णता के वर्णन के लिए अति सरल विधि 'हम' कहना उचित होगा, क्योंकि यह अपने में उस प्रकार की सहानुभूति और पारस्परिक पहचान को समाविष्ट करता है। इसके लिए 'हम' ही स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

प्राथमिक समूह की विशेषताएं

1. **एक से अधिक व्यक्ति:** कूले ने जब प्रारंभ में प्राथमिक समूह की परिभाषा दी, तब उन्होंने कहा कि समूह के लिए एक से अधिक सदस्यों का होना आवश्यक है। समूह के इस लक्षण के संबंध में बाद के सभी समाजशास्त्रियों ने यह एक अनिवार्य लक्षण स्वीकार किया।

2. **संवेग:** कूले ने प्राथमिक समूह का दूसरा लक्षण संवेग बताया। ये संवेग हम की भावना को सुदृढ़ करते हैं। जब समूह के सदस्य संवेगात्मक रूप से जुड़े होते हैं तब बिना किसी हानि-लाभ की चिंता करते हुए वे एकजुट होकर रहते हैं।

3. **पारस्परिक पहचान:** कूले ने प्राथमिक समूह की एक और विशेषता पारस्परिक पहचान बताई है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति की समाज या समुदाय में पहचान अपने परिवार से होती है, अपने आप में वह कुछ नहीं है।

4. **शारीरिक समीपता:** किंग्सले डेविस ने प्राथमिक समूह का बहुत बड़ा लक्षण शारीरिक समीपता को माना है। एक ही छत के नीचे रहने के कारण प्राथमिक समूह के सदस्य एक दूसरे को बहुत निकटता से समझते हैं। सदस्यों के संपूर्ण जीवन का सरोकार प्राथमिक समूह से होता है। रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार सभी में प्राथमिक समूहों के सदस्यों की किसी न किसी प्रकार से भागीदारी होती है।

5. **लघु आकार:** डेविस यह भी कहते हैं कि प्राथमिक समूहों का आकार छोटा होता है। छोटे आकार की कोई संख्या निर्धारित नहीं है, लेकिन आकार इतना छोटा होना चाहिए कि समूह के सदस्य एक दूसरे से प्राथमिक रूप से जुड़ सकें अथवा संपर्क कर सकें। नातेदार और समुदाय के सदस्य अंतर्क्रियाओं की दृष्टि से एक दूसरे के निकट होते हैं। इसीलिए डेविस कहते हैं कि समूह का आकार इतना छोटा होना चाहिए कि सदस्य एक दूसरे से प्रत्यक्ष संपर्क बनाए रख सकें।

6. **संबंधों की अवधि:** यह लक्षण भी डेविस ने रखा है। वे कहते हैं कि प्राथमिक समूह के सदस्यों के संबंध छोटी अवधि के लिए नहीं होते। संबंध जितने लम्बे समय के लिए होंगे, प्राथमिक समूह उतना ही अधिक सुदृढ़ और सुगठित होगा। गांव के लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। पीढ़ियां भी इसी भांति परिवार से जुड़ी रहती है। नातेदारी के संबंध भी लम्बी अवधि तक चलते

7. **सुनिश्चितता:** रॉबर्ट रेडफील्ड ने प्राथमिक समूह के जो लक्षण रखे हैं, उनका संदर्भ ग्रामीण समुदाय से है। उन्होंने मेक्सिको के गांवों का अध्ययन किया है। रेडफील्ड ने प्राथमिक समूह की बहुत बड़ी विशेषता सुनिश्चितता को बताया है। इसका मतलब यह है कि एक प्राथमिक समूह दूसरे प्राथमिक समूहों से पृथक् होता है। इसकी अपनी एक अलग पहचान होती है। गांव के संदर्भ में रेडफील्ड कहते हैं कि यह बहुत निश्चित है कि गांव यहां प्रारंभ होता है और वहां समाप्त होता है। परिवार की भी ऐसी ही पृथकता होती है। यह परिवार अमुक पीढ़ियों का है, इसका गोत्र यह है और सामान्यतया इस परिवार में इस तरह के व्यवसाय होते रहते हैं।

8. **सजातीयता:** प्राथमिक समूह के सदस्य चाहे पुरुष हों या स्त्री, छोटे हों या बड़े, समान स्तर के होते हैं। सामान्यतया सोच विचार, शिक्षा-दीक्षा और धंधे में इन सदस्यों में कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं होता। इसी कारण रेडफील्ड सजातीयता को प्राथमिक समूहों का बहुत बड़ा लक्षण मानते हैं। ग्रामीण समुदाय में तो धंधे की यानी कृषि की सजातीयता बहुत अधिक होती है। बाढ़ आ गई या सूखा पड़ गया, तब गांव के सभी लोग निराशा की सांस में ऊपर नीचे होने लगते हैं। यह एक प्रकार की मानसिक सजातीयता है।

9. **आत्मनिर्भरता**: रेडफील्ड गांवों के बारे में कहते हैं कि यहां आत्मनिर्भरता होती है। पालने से लेकर शमशान घाट तक की संपूर्ण आवश्यकताएं गांव में पूरी हो जाती हैं। इस अर्थ में प्राथमिक समूह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में आत्मनिर्भर होते हैं, परिवार को देखिए- गरीब हो या अमीर, अपने भाई-बहिनों की सभी आवश्यकताएं यहां पूरी हो जाती हैं। मित्र मंडली भी एक ऐसा समूह है जो अपने मित्रों की सहायता सभी आवश्यकताओं में करते हैं। यही हाल नातेदारों का भी है। यह निश्चित है कि आज के विश्वव्यापीकरण और उदारीकरण के युग में आत्मनिर्भरता हाशिये पर आ गई है, फिर भी कई ऐसी आवश्यकताएं हैं जो सामान्यतया प्राथमिक समूह के सदस्यों के कारण पूरी हो जाती हैं।

10. **अंतर्क्रियाएँ:** विलियम वाइट ने प्राथमिक समूह का बहुत बड़ा लक्षण अंतक्रिया को माना है। समूह के सदस्य एक दूसरे से बराबर मिलते जुलते रहते हैं। अंतक्रियाओं में ही संवेग पाए जाते हैं। अंतक्रिया और संवेग प्राथमिक समूह के सदस्यों को एक सूत्र में बाधते हैं।

11. **प्रतियोगिता और संघर्ष**: प्राथमिक समूह इसी समाज की उपज हैं। इन समूहों में कितनी ही एकता और सुदृढ़ता हो, दरारे अवश्य होती हैं। महाभारत का युद्ध कोई दो विरोधी समूहों में नहीं हुआ था। इस युद्ध में कौरव और पांडव यानी भाई-भाई ही लड़े थे। राम को वनवास इसलिए मिला कि कैकेयी को दशरथ का राम को राजा बनाना रास नहीं आया और इसी कारण राम को वनवास जाना पड़ा। महाकाव्य की कथाओं के ये दृष्टात मिथक कहे जा सकते हैं। इन्हें छोड़ दें तब भी आज प्रत्येक प्राथमिक समूह में मिट्टी के चूल्हे हैं। मित्र-मित्र में लड़ाई, सगे-संबंधी में झगड़ा, गांव में राजनीतिक दलबंदी और परिवार में संपत्ति बँटवारे पर झगड़ा, सभी प्राथमिक समूहों में संघर्ष है, प्रतियोगिता है।

द्वितीयक समूह: कूले ने प्राथमिक समूह के विवरण में द्वितीयक समूह की चर्चा नहीं की है। शायद 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में विदेशों में भी द्वितीयक समूहों का अधिक महत्व नहीं था। इसी कारण कूले ने प्राथमिक समूहों की व्याख्या तक ही अपने आपको सीमित रखा। इन देशों में उद्योगीकरण और शहरीकरण के परिणामस्वरूप द्वितीयक समूह महत्वपूर्ण होने लगे हैं। इसी कारण 20वीं शताब्दी के मध्य में पहुंचकर द्वितीयक समूह अध्ययन के मुख्य क्षेत्र बन गए। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि समाज जितना अधिक आधुनिक, औद्योगिक और पूंजीवादी होगा, उतने ही अधिक उसमें द्वितीयक समूह होगे।

एंथोनी गिडेंस जब द्वितीयक समूह को परिभाषित करते हैं तो निश्चित रूप से उनका संदर्भ अमेरिका है। इस देश में तो मनुष्य का संपूर्ण जीवन ही द्वितीयक समूह की परिसीमा में आ जाता है। एक द्वितीयक समूह नियमित रूप से मिलते हैं, लेकिन जिनके संबंध मुख्य रूप मे अवैयक्तिक होते है। द्वितीयक समूहों में व्यक्तियों के संबंध प्रगाढ़ नहीं होते। वे लोग सामान्यतया एक दूसरे के निकट तब आते हैं जब उनके कुछ व्यावहारिक और निश्चित काम होते हैं।

वास्तव में देखा जाए तो कई ऐसी सामाजिक स्थितियां होती हैं, जिनमें प्राथमिक और द्वितीयक समूहों में कोई निश्चित अंतर करना कठिन हो जाता है। राजनीतिक दलों, शिक्षण संस्था की कमेटियों और व्यापारिक संगठनों में कई सदस्य एक दूसरे के साथ मित्रता स्थापित कर लेते हैं। ऐसे लोग बड़े सहज भाव से एक दूसरे से मिलते भी हैं। वे अवैयक्तिक कार्य भी करवा लेते हैं। व्यापारिक संगठनों के लोग अनौपचारिक रूप से यानी प्राथमिक समूहों की तरह जीवन के कई क्षेत्रों में एक दूसरे की सहायता करते हैं। तथ्यपूर्ण बात यह है कि द्वितीयक समूहों में भी कई छोटे-छोटे प्राथमिक समूह बन जाते हैं। सरकारी अधिकारी तंत्र में तो पदोन्नति, स्थानांतरण आदि मुद्दों पर अधिकारीतंत्र के प्राथमिक समूह ही प्राय: काम में आते हैं।

द्वितीयक समूह की विशेषताएं

1. द्वितीयक समूह लोगों की एक समिति है ये समूह मध्यम आकार से वृहद् आकार के होते हैं। इनमें सदस्यों की संख्या बहुत बड़ी होती है। इसी कारण लोग एक दूसरे को जानते भी नहीं हैं। इन द्वितीयक समूहों को समिति इसलिए कहते हैं कि इनकी स्थापना सोच समझकर विधिवत् रूप से की जाती है। द्वितीयक समूहों के उदाहरण में अधिकारीतंत्र, स्वयंसेवी संस्थाएं, व्यावसायिक संगठन आदि सम्मिलित हैं।

2. अवैयक्तिक संबंधः द्वितीयक समूह के सदस्य एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते। बैंक के काउंटर पर वह व्यक्ति जो चेक लेता है, वह कौन सी जाति-बिरादरी का है, कहां का रहने वाला है, विवाहित या अविवाहित है, इसकी हमें कोई व्यक्तिगत जानकारी प्राय: नहीं होती। हमारा उद्देश्य तो चेक का धन लेना है। तात्पर्य हुआ, द्वितीयक समूह के सदस्यों के साथ हमारे संबंध किसी सुनिश्चित उद्देश्य को लेकर ही होते हैं। इससे आगे संबंधों का हमारा कोई सरोकार नहीं होता।

3. संबंधों का आधार संविदा होती है: द्वितीयक समूह के सदस्यों के साथ लंबी अवधि तक हमारे संबंध होते हैं। बाजार का कामकाज बैंक के संबंधों के बिना नहीं हो सकता। चिकित्सालय या सेवार्थ संस्थाओं के द्वितीयक संगठनों के साथ भी हमारे संबंध निश्चित नियमों के अनुसार होते हैं।

4. औपचारिक संबंध: द्वितीयक समूहों में लोगों के साथ हमारे संपर्क वस्तुतः प्रस्थिति और भूमिका से जुड़े होते हैं। किसी अमुक प्रस्थिति में कौन सा व्यक्ति काम करता है, इस व्यक्ति से हमें कोई मतलब नहीं। आज इस प्रस्थिति में महेश काम करता है, कल वह चला जाता है और उसके स्थान पर सुरेश आ जाता है। हमें महेश व सुरेश से कोई तात्पर्य नहीं है। हमारा संबंध तो उस प्रस्थिति के साथ है, जिस पर इन नामों के लोग काम करते थे।

5. निश्चित उद्देश्यः द्वितीयक समूह में व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती। प्रत्येक संगठन के कुछ सीमित और निश्चित लक्ष्य होते हैं। ये संगठन इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए ही काम करते हैं, इनसे आगे नहीं। चिकित्सालय हमें बीमारी का निदान तो देगा लेकिन यदि हम इससे हमारे पहनने के कपड़े मागे तो इस आवश्यकता की पूर्ति का काम चिकित्सालय के क्षेत्र से बाहर है।

6. संविदा के उल्लंघन पर दंड: द्वितीयक समूह संविदा की सीमा में काम करते हैं। यदि ये समूह संविदा की शर्तों को नहीं मानते तो इसका खामियाजा उन्हें पंचों या अदालत के माध्यम से भोगना पड़ेगा। जब बीमा धारक को उसकी निश्चित धनराशि नहीं मिलती या उसके भुगतान में अड़चने आती हैं तो दोनों के लिए अदालत खुली है। संविदा द्वितीयक समूहों के सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करती है।